REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 2 | NOVEMBER – 2017

सम्बन्धों की संकल्पना

Dr. Satyabir Yadav
Head, Department of Geography,
Govt. College for Women, Pali (Rewari)

प्रस्तावना :-

विश्व की सभी वस्तुऐं एवं तथ्य चाहे वह जड़ हो या चेतन एक–दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित होते हैं। इन तथ्यों में कोई भी स्वतन्त्र नहीं है। अतः इनका पृथक अध्ययन सम्भव नहीं है। इस सिद्धान्त की व्याख्या बहुत संक्षेप में रैटजल ने की है तथा ब्लाश ने विस्तृत स्वरूप प्रदान किया। कुमारी सेम्पल ने भी इस विचारधारा का पक्ष लिया। ब्रुंश ने इस सिद्धान्त को सभी प्रकार से विस्तृत स्वरूप प्रदान किया। ब्रुन्स महोदय ने स्पष्ट किया कि भूगोल के विभिन्न तथ्यों का अध्ययन अलग–अलग नहीं किया जा सकता। ये भौगोलिक तथ्यों का सम्पूर्ण अध्ययन अनेक अन्तर्सम्बन्धों में निहित है किसी विशेष तथ्य में व्यक्तिगत अध्ययन से मानव भ्गोल का सही मूल्यांकन सम्भव नहीं है।

Geography is the study of relationship and interaction between different elements" किसी भी देश या प्रदेश में बहुत सी प्राकृतिक विशेषताएं होती है जैसे वहां की आकृति, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति, खनिज पदार्थ, कृषि फसलें, गांव, नगर जनसंख्या, व्यापार आदि विभिन्न रूपों में होते हुए भी ये रूप वहां के अकस्मात ढेर के समान उस क्षेत्र में एकत्रित नहीं है वरन् सबका एक सहचर्य होता है। पारस्परिक क्रियाएँ होती हैं वे एक–दूसरे से सम्बन्धित होती हैं उससे पारस्परिक निर्भरता बनती है जिसके द्वारा उस प्रदेश की एक मिली–जुली सामान्य छाप बन जाती है। इन विभिन्न तत्वों की इस सम्बद्धता को प्रदेश की आन्तरिक सम्बद्धता कहते हैं। इसे स्थानिक समाकलन भी कहते है। दो तथ्यों के बीच विभाजन तो हो सकता है किन्तु उनके बीच दीवार नहीं खीचीं जा सकती है। भूगोल को स्वतन्त्र एवं अलग खण्डों में विभाजित नहीं किया जा सकता। पृथ्वी तल पर वस्तुओं, विचारों तथा मनुष्यों की एक स्थान से दूसरे स्थान पर गतिशीलता रहती है। प्राकृतिक तत्वों की गतिशीलता वायु या जल द्वारा होती है। वस्तुओं या मनुष्यों की गतिशीलता परिवहन के साधनों के द्वारा होती है। विचारों की गतिशीलता संचार साधनों या मनुष्यों की पारस्परिक सभाओं, भाषाओं द्वारा होती है। विभिन्न क्षेत्रों के तत्वों, वस्तुओं, भौतिक तथा प्राकृतिक दशाओं और मानव के बीच अन्तःसम्बन्ध पाया जाता है इसे ही अन्तर्सम्बन्ध के रूप में परिभाषित किया है। भौतिक पर्यावरण और मानव पर्यावरण का अन्तर्सम्बन्ध देखा जा सकता है। प्राकृतिक पर्यावरण से मानव पक्ष प्रभावित रहा है और कहीं–कहीं पर मानव प्राकृतिक पर्यावरण पर अपना प्रभाव भी डालता है। इस प्रकार मानव व पर्यावरण दोनों से अन्तःसम्बन्ध पाया जाता है मनुष्य ने उन प्रदेशों या क्षेत्रों में सर्वाधिक विकास किया है जहां पर्यावरणीय दशाएँ उसके अनुकूल रही हैं। यही कारण है कि मानव सभ्यताएँ दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों की बजाय नदि'घाटियों में अधिक पनपी क्योंकि नदी–घाटियों की भौतिक दशाएं मानव वातावरण के अनूकूल थी।

संकल्पना का विकास

अपने विकास की बाल्यावस्था में भूगोल पृथ्वी तल के विज्ञान के रूप में वर्णित हुआ जिसमें पृथ्वी तल का सम्पूर्ण अध्ययन भूगोल की अध्ययन परिधि में आ गया। इसके बाद भूगोलविदों के अध्ययन का उद्देश्य किसी भूखण्ड में मिलने वाले किसी एक तत्व या तथ्य के विश्लेषण तक नहीं रहा अपितु पारस्परिक अन्तर्सम्बन्ध का विवेचन हो गया। वास्तविक जगत के अति सूक्ष्म तत्व के अध्ययन हेतु विज्ञान के चाहे जिस प्रविधि को अपनाया जाए उसकी वास्तविकता के समय स्वरूप का निरूपण तब तक नहीं हो सकता जब तक प्रत्येक तत्व का अध्ययन क्षेत्रीय सन्दर्भ में जोड़कर न किया जाए।हम्बोल्ट ने इसी विचाधारा से तत्वों के परस्पर सम्बन्धों को स्वीकार किया है इसके अनुसार निजी क्षेत्र के भू–दृश्य एवं प्रकृति की विशिष्टताओं को समझने के लिए एक–एक तत्व जैसे– जलवायु, मृदा, वनस्पति, कृषि आदि के नितरण की जानकारी आवश्यक है। इसके पश्चात क्षेत्र विशेष मे इन तत्वों के परस्पर अर्न्तसम्बन्धों पर ध्यान देना आवश्यक है जैसे, धरातलीय स्वरूप एवं जलवायु, मृदा, वनस्पति, उच्चावय एवं मानव बसाव, मृदा एवं कृषि आदि कारक परस्पर सम्बन्धित हैं। हम्बोल्ट निम्न तथ्यों को स्वीकार करते हैं–किसी क्षेत्र के भू–दृश्य, चटटाने, जलवायु, वनस्पति मिट्टी एवं जीव–जन्तु किस प्रकार एक दूसरे से प्रभावित होते हैं तथा किस प्रकार एक दूसरे पर निर्भर रहते हैं।तत्वों की अन्तक्रिया के पश्चात तत्वों का वर्गीकरण करते हैं।एक क्षेत्र में मिलने वाले तत्वों में व्याप्त सहसम्बन्ध की विवेचना करते हैं।उदाहरण स्वरूप यदि हम कृषि फसल को ही लें तो हम ये जानना चाहते हैं कि किसी विशेष फसल का विशेष स्थान पर होने का क्या कारण है? भारत में सबसे ज्यादा चाय आसाम में ही क्यों पैदा होती है? इसका सीधा व स्पष्ट कारण चाय की उपज के लिये जो पर्यावरणीय दशाएँ आवश्यक होती हैं उसकी अनुकूल स्थिति आसाम में पायी जाती है। चाय की उपज का उसके धरातल, वर्षा, मिट्टी तथा तापमान के साथ सम्बन्ध है। (चित्र

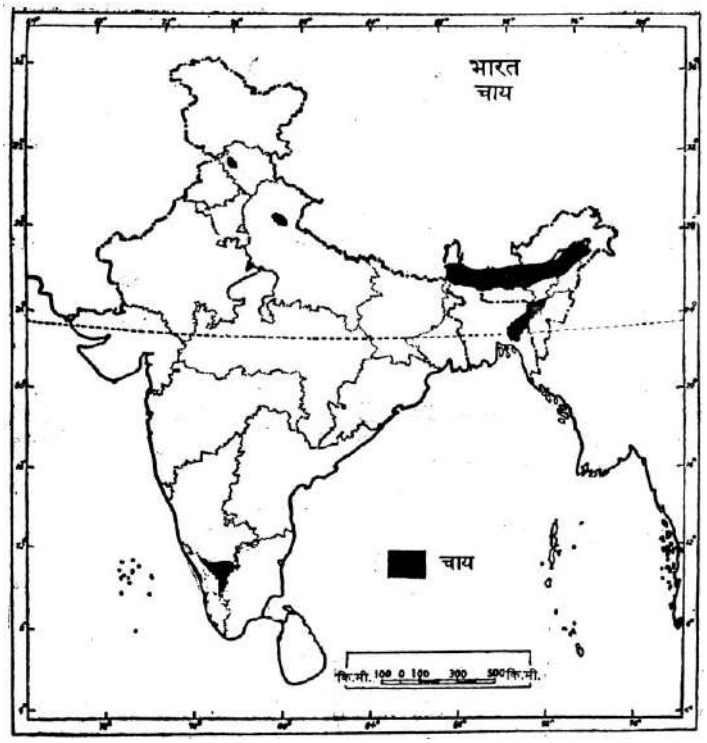

चित्र : चाय उत्पादन का भौतिक दशाओं से अन्तर्सम्बन्ध

कार्ल रिटर ने बताया कि मानव जैसे–जैसे विकसित होता जाता है वैसे–वैसे वह प्राकृतिक तत्वों को अपनी आवश्यकता एवं क्षमता के अनुसार प्रभावित करता हैं। भूतल पर कार्यरत अन्तर्जात एवं बहिर्जात बल मिट्टी के गुण, मनुष्य की क्रिया से प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। उन्होंने एक उदाहरण देकर स्पष्ट किया कि जैसे पर्वतमालाओं का वर्णन मात्र प्राकृतिक दृष्टिकोण से नहीं किया जा सकता कि विश्व की विभिन्न पर्वतमालाएँ

कहा पर स्थित है बल्कि यह बतलाया की किस प्रकार ये पर्वतमालाएँ मनुष्य के कार्यों को प्रभावित कर रही है। उन्होंने और अधिक स्पष्ट करते हुए बताया कि नदी मात्रा जल धारा नहीं है जो अपने उद्‌गम स्थान से निकलकर झील का समुद्र में गिरती है, बल्कि नदी के साथ मानव अधिवास, कृषि, जलवायु, व्यापार, नगर जैसे तथ्य जुड़े हुऐ है।इसी प्रकार भौगोलिक तत्व जैसे स्थिति, उच्चावच, जलप्रवाह, जलवायु एवं मिट्टी के अन्तर्सम्बधों से एक विशिष्ट वनस्पति का जन्म हो जाता है। और इस विशिष्ट वनस्पति के कारण वहाँ विशिष्ट जीव एवं पशुजीवन सम्बन्धित हो जाता है क्योंकि इन सभी तथ्यों का आपस में अन्तर्सम्बन्ध पाया जाता है।भूगोल में यूनानी, रोमन और अरब भूगोलवेताओं के लेखों में अस्पष्ट द्वैतवाद विद्यमान रहा है। स्ट्रेबों ने प्रादेशिक वर्णन को अधिक महत्वपूर्ण माना है जबकि टॉलमी ने गणितीय भूगोल पर बल दिया। विधिवत रूप से सबसे पहले वारेनियस ने सन् 1650 में अपनी पुस्तक सामान्य भूगोल में भौतिक भूगोल व मानव भूगोल के बीच अन्तर स्पष्ट किया। मानव एवं पर्यावरण के वास्तविक सम्बन्धों की जानकारी के लिए मानव समाज के अध्ययन क्षेत्र की स्थिति एवं मानव समूह के सामंजस्य के सन्दर्भ में किया जाता है। इस प्रकार का सांमजस्य भौगोलिक सम्बन्ध से सम्बोधित किया जाता है। भौगोलिक सम्बन्ध सामान्यतः निम्न प्रकार के होते हैं।

1. उपयोग सम्बन्ध

ये सम्बन्ध बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं इन भौगोलिक सम्बन्धों के अन्तर्गत मानव कृषि उत्पादन हेतु शुष्क क्षेत्रों में भूमिगत जल का उपयोग करता है। उदाहरणार्थ दक्षिणी पश्चिमी हरियाणा में वर्षा की मात्रा बहुत ही कम है अतः यहां के लोग शुष्क क्षेत्र में भूमिगत जल का उपयोग करके गेहँ, बाजरा व अन्य फसल उत्पन्न करते हैं। यदि भूमिगत जल का उपयोग नहीं किया जाये तो यहां पर गेहँ जैसी फसल का उत्पादन सम्भव नहीं है। मानव आधुनिक विज्ञान और तकनीकी की सहायता से अनुपजाऊ भूमियों को कृषि योग्य बनाता है। खनिज उत्पादन हेतु खदानें खोदता है तथा महत्वपूर्ण खनिजों का उपयोग अपने कल्याण के लिए करता है। मानव ने प्रौद्योगिकी के विकास के साथ–साथ मानव कल्याण के लिए जल संसाधनों, ऊर्जा संसाधन, वन संसाधन, मृदा संसाधन व खनिज संसाधन आदि अनेक प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग किया है।

2. नियन्त्रण सम्बन्ध

मानव अपनी कुशलता व तकनीकी की सहायता से किसी स्थान पर उपलब्ध श्रोतों को उपयोगी बनाता है तथा उस पर नियन्त्रण भी रखता है उदाहरण स्वरूप कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए मिट्टी की उर्वरा शक्ति में वृद्धि करके अधिक उत्पादन प्राप्त करना, उन्नत किस्म के बीज, रासायनिक उर्वरक, सिंचाई व कृषि मशीनरी के प्रयोग से एक खेत मे एक वर्ष में एक से अधिक फसले लेना अधिक उत्पादन लेने के लिए फसलों को कीड़ों तथा बिमारियों से बचाने के लिए कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग करना आदि सभी कार्य मानव के प्राकृतिक पर्यावरण पर नियन्त्रण सम्बन्धों को दर्शाते हं।

3. विचार सम्बन्ध

मानव अपने विचारों के अनुसार कई क्षेत्रों में पर्यावरण के साथ अच्छे सम्बन्ध स्थापित करता है। उदाहरणार्थ – गंगा नदी भारतवासियों की धार्मिक भावनाओं से जुड़ी है, पीपल के पेड़ में पानी देना पुण्य माना जाता है जबकि पीपल के पेड़ को काटना पाप माना जाता है। वास्तव में पर्यावरण को शुद्ध रखने के लिए पीपल का पेड़ बड़ा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह दिन व रात्री दोनों समय ही वायुमण्डल में आक्सीजन छोडता है। अतः पीपल के वृक्षों के संरक्षण के लिए मानव धार्मिक भावनाओं तथा विचारों के माध्यम से पर्यावरण तथा मानव के बीच सामंजस्य स्थापित करता है।

4. पारस्परिक सम्बन्ध

प्राकृतिक पर्यावरण तथा मानव के सम्बन्ध पारस्परिक हैं। अतिशील ध्रुवीय प्रदेशों तथा गर्म मरूस्थलीय भागों में या बाढ़ों तथा भूकम्पों के समय प्रकृति का प्रभाव अधिक दिखाई देता है। जबकि मानव ने आधुनिक विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में बड़ी उन्नति की है और कृषि तथा औद्योगिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़ी तजी से दोहन कर रहा है जिससे मानव का प्राकृतिक पर्यावरण पर प्रभाव दिखाई दे रहा है अर्थात् प्रकृति रूपान्तरित दिखाई दे रही है। अतः प्राकृतिक पर्यावरण एवं मानव के सम्बन्ध पारस्परिक हैं। दूसरे शब्दों में इसे

पारिस्थितिकीय विचारधारा के नाम से भी पुकारा जा सकता है जिसके अनुसार जीव व उसके वातावरण के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। पर्यावरण के मध्य मानव पर्यावरण सम्बन्धों की यह नवीन विचारधारा पारिस्थितिकीय के आधारभूत सिद्धान्तों पर आधारित है। पर्यावरण के साथ पशु–पक्षियों तथा वनस्पतियों का सम्बन्ध हो पारिस्थितिकी कहलाता है पर्यावरण के समस्त जैव तथा अजैव कारकों के समन्वय से उत्पन्न तन्त्र ही पारिस्थितिक तन्त्र है। दूसरे शब्दों में जीवों और भौतिक पर्यावरण के बीच उत्पन्न सन्तुलित अन्तर्सम्बन्ध के व्यवस्थित रूप को पारस्थितिकी तन्त्र कहते हैं। उदाहरण स्वरूप यदि हम मानव तथा वनों के अन्तर्सम्बन्धों को देखे तो पता चलता है कि जिस स्थान पर जनसंख्या अधिक है और पेड़–पौधे कम है वहां वायु प्रदूषण की समस्या उत्पन्न हो जाती है जैसे दिल्ली व मुम्बई आदि। क्योंकि पेड़–पौधे आक्सीजन छोड़ेते है तथा कार्बनडाइआक्साइड ग्रहण करते हैं जबकि मानव एवं अन्य जीव सांस द्वारा तथा औद्योगिक इकाइयां व परिवहन साधन कार्बनडाइआक्साइड की मात्रा में वृद्धि करते हैं जिससे जनसंख्या के अनुपात में पेड़ पौधों की संख्या कम होने से वहां वायु प्रदूषण जैसी समस्या उत्पन्न हो जाती है। इस विचारधारा के अनुसार मानव का प्राकृतिक पर्यावरण के साथ मैत्री पूर्ण सह–सम्बन्ध होना चाहिए न कि विनाशात्मक। मानव को पारिस्थितिक सिद्धान्तों को ध्यान में रखते हुए प्राकृतिक संसाधनों का पोषणीय दोहन करना चाहिए। इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों के नियमित उपयोग के साथ–साथ पर्यावरण प्रबन्धन से अतिदोहन वाले संसाधनों की पूर्ति हो सकेगी तथा पर्यावरण प्रदूषण तथा पर्यावरणीय अवनयन पर नियन्त्रण स्थापित करके पुनः पर्यावरण सन्तुलन स्थापित किया जा सकेगा। अतः पर्यावरण सनतुलन को बनाये रखने के लिए हमें प्रकृति के नियमों व कार्य पद्धति की अवहैलना न करके मानव तथा पर्यावरण के मध्य पारस्परिक सम्बन्धों को स्थापित करने पर बल देना चाहिए।

REFERENCES:

1.(2010) Geography Translated by Roller Duane W Princeton University press.
2.Harby, William F. Jones, M (1991) An introduction to settlement geography, Cambridge Uni. Press.
3.Hayes, Bohanan, James (2009) What is environmental geography, anyway. Webhost,bridge.edu ,Bridgewater State University
4.Huges, William (1863) The history of geography Oxford Basil Blackwell.
5.Ratzel,F (1882) Anthropogeographie, vol, 1 stuttgart: J Engethorn
6.James, P.E. All possible worlds: A History of geographical ideas, Indianpolis: odessey press.

Dr. Satyabir Yadav
Head, Department of Geography, Govt. College for Women, Pali (Rewari)